ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-12* March-2021
Anthology : The Research

गायक व शास्त्रकार : पंडित विष्णु नारायण भातखंडे

Pandit Vishnu Narayan Bhatkhande

Paper Submission: 05/03/2021, Date of Acceptance: 19/03/2021, Date of Publication: 22/03/2021

रणजीत सिंह
कार्यकारी प्रिंसीपल,
भाई संगत सिंह खालसा कॉलेज, बंगा,
शहीद भगत सिंह नगर,
पंजाब, भारत

सारांश

शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में पंडित विष्णु नारायण भातखंडे का नाम बहुत ही सत्कार सहित लिया जाता है। आपने श्रीमल्ललक्ष्यसंगीतम्, हिंदुस्तानी संगीत पद्धति, कृमिक पुस्तक मालिका, अभिनव राग मंजरी, स्वर मालिका, लक्ष्य संगीत, ए शॉर्ट हिस्टोरीकल सर्वे ऑफ दि म्यूज़िक ऑफ अपर इण्डिया एवं ए कम्पैरेटिव स्टॅडी ऑफ सम ऑफ दि लिडिंग म्यूज़िक सिस्टमज ऑफ दि फिफटीन्थ, सिक्सटीन्थ, सैवनटीन्थ और ऐटीन्थ सैन्चुरीज समेत कई ग्रंथों की रचना की। संगीत के प्रचार–प्रसार के लिए उन्होंने कई संगीत विद्यालयों की स्थापना की और अनेक संगीत सम्मेलन करवाए। आप ने अलग–अलग यात्राओं के दौरान ध्रुपद, धमार, ख्याल, टप्पा, ठुमरी, होरी, सादरा और चतुरंग आदि की सैंकड़ों बंदिशें एकत्रित की और उनको प्रकाशित करवाया। पंडित विष्णु नारायण भातखंडे 19 सितंबर, 1936 को परलोक सिधार गए।

In the field of classical music, Pandit Vishnu Narayan Bhatkhande is named with great respect. He composed several texts including Shri Malla Lakshya Sangeetham, Hindustani Sangeet Padati, Karmik Pustak Malika, Abhinav Rag Manjari, Swar Malika, Lakshya Sangeet, A Short Historical Survey of the Music of Upper India and A Comparative Study of Some of the Leading Music Systems of the Fifteenth, Sixteenth, Seventeenth and Eighteenth Centuries.

For the promotion of music, he established several music schools and organized many music conferences. He collected and published hundreds of compositions of Dhrupad, Dhamar, Khiyal, Tappa, Thumri, Hori, Sadra and Chaturanga etc. during different journeys. He left for heavenly abode on September 19, 1936.

मुख्य शब्द : शास्त्रीय संगीत, भातखंडे स्वरलिपि, सितार।
Clasical Music, Bhatkhande Notation, Sitar.

प्रस्तावना

पंडित विष्णु नारायण भातखंडे का जन्म 10 अगस्त, सन् 1860 ई. को कृष्ण अष्टमी वाले दिन बंबई के बालकेश्वर नामक स्थान पर हुआ। उनके पिता श्री नारायण राव भातखंडे खुद संगीत प्रेमी थे, इसलिए बचपन में ही बालक विष्णु नारायण को संगीत सीखने की प्रेरणा अपने पिता जी से मिली। आप अपनी माता जी के मुँह से जो भी गीत सुनते थे उसकी नकल करके हू–ब–हू गा देते थे। स्कूली शिक्षा के साथ–साथ आप संगीत की शिक्षा भी लेते रहे। डॉ0 देविन्द्र कौर के अनुसार, ''शास्त्रीय संगीत की नियमित रूप से शिक्षा प्राप्त करने के साथ इन्होंने सेठ वल्लभ दास जी से सितार की शिक्षा ली। श्री राव जी बुआ बेलबाधकर, जैपुर के मोहम्मद अली खां, ग्वालियर के पंडित एकनाथ और रामपुर के क्लबे अली खां आदि गुरूओं से गायन की शिक्षा हासिल की। सन् 1883 में बी.ए और सन् 1890 में एल.एल.बी. की परीक्षाएँ पास कीं, परंतु इनकी रूचि संगीत में अधिक होने के कारण आप संगीत सेवा में लीन हो गए।''[1]

एल.एल.बी. की परीक्षा पास करने के उपरांत आप कुछ समय कराची में वकालत भी करते रहे। विशेष सफलता ना मिलने पर आप बंबई आ गए और छोटी अदालतों में वकालत शुरू कर ली। पर संगीत की रूचि भारी रहने के कारण आपका वकालत के क्षेत्र में मन न लगा और संगीत के क्षेत्र में कुछ करने की ठान ली। उन दिनों ही आप को संगीत के प्रसिद्ध कलाकारों को सुनने का मौका मिला और आप बहुत प्रभावित हुए।

वकालत छोड़कर आप ने संगीत के ग्रंथों का अध्ययन आरंभ किया। इसी दौरान मुंबई की 'गायन उत्तेजक मण्डली' में आप संगीत की शिक्षा के साथ–साथ संगीत के भिन्न–भिन्न विषयों पर व्याख्यान भी करते रहे। इस तरह आप ने ध्रुपद, धमार एवं ख्याल गायन में महारत हासिल की। संगीत के ग्रंथों का अध्ययन करते हुए आप ने अनुभव किया कि संगीत का सर्वपक्षीय विकास तभी संभव है यदि क्रियात्मक और शास्त्र पक्ष दोनो में संबंध स्थापित किया जाये और सर्वसम्मति के साथ संगीत के कुछ नियम/सिद्धांत निश्चित किए जाए। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए आपने हिंदि, तेलगू, गुजराती, बंगला, संस्कृत और अंग्रेजी भाषाओं का गहरा अध्ययन किया।

पंडित विष्णु नारायण भातखंडे जी ने कई यात्राएँ कीं। डॉ0 लक्ष्मी नारायण गर्ग के अनुसार, ''सन् 1904 में आपकी ऐतिहासिक यात्रा आरंभ हुई। सबसे पहले आप दक्षिण भारत की तरफ गए। वहाँ के बड़े–बड़े नगरों में स्थित पुस्तकालयों में पहुंच कर संगीत संबंधी प्राचीन ग्रंथों का अध्ययन किया। अनेक दक्षिणी विद्वानों के साथ संगीत चर्चाओं में भाग लिया। यहीं पर आपको पंडित व्यंकटमखी के 72 थाटों का भी पहली बार पता लगा।''[2] इस यात्रा के दौरान आप मद्रास, मदुरा, त्रिचनापल्ली, रामेश्वर, तंजौर, कर्नाटक आदि स्थानों पर गए। उन्होंने संगीत संबंधी भाषण भी दिए। इस यात्रा के दौरान आपने प्रसिद्ध गायकों को नजदिक से सुना और भिन्न–भिन्न रागों के बहुत सारे गीत एकत्रित किए। दक्षिण यात्रा के दौरान ही आपकी भेंट हैदराबाद के प्रसिद्ध विद्वान अप्पा शास्त्री के साथ हुई। अप्पा शास्त्री जी के सहयोग से ही पंडित जी ने हिंदुस्तानी संगीत पद्धति में राग वर्गीकरण के लिए 10 थाटों की प्रणाली को अपनाया।

सन् 1906 में पंडित जी ने उत्तरी और पूर्वी भारत की यात्रा की। इसी दौरान जयपुर, मनरंग और रामपुर के घरानेदार उस्तादों से आप ने बड़ी मेहनत के साथ ध्रुपद, धमार, ख्याल, टप्पा, ठुमरी, होरी, सादरा और चतुरंग आदि की सैंकड़ों बंदिशें प्राप्त कीं। इस यात्रा के दौरान आपको उत्तरी संगीत पद्धति का विशेष ज्ञान हासिल हुआ। इस दौरान आपने संगीत विद्वानों को मिलकर प्राचीन और अप्रचलित रागों के संबंध में खोज कार्य किए। सन् 1907 में आप ने विजयनगर, हैदराबाद, जगन्नाथपुरी, कलकत्ता, नागपुर की और सन् 1908 में उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश के विभिन्न नगरों की यात्रा की।

इस समय उत्तर भारत में प्राचीन राग रागिनी पद्धति प्रचलित थी। वहाँ के संगीतकार इस पद्धति के नियमों को नजरअंदाज करते हुए अपना गायन करते थे। बड़े–बड़े गायक गाते तो बहुत ही सुंदर थे पर वह इस बात से अंजान होते थे कि वह जो गाना गा रहे थे वह किस राग में है और इसमें कौन से सुरों का प्रयोग होता है। इसके हल के लिए पंडित विष्णु नारायण भातखंडे ने कई संगीत सम्मेलन करवा के थाट राग प्रणाली का प्रचार किया। क्रियात्मक संगीत को लिपिबद्ध करने के लिए आप ने भातखंडे स्वरलिपि पद्धति का निर्माण किया। हरीश चन्द्र श्रीवास्तव के अनुसार, ''भातखंडे जी के क्रियात्मक संगीत को लिपिबद्ध करने के लिए एक नवीन स्वरलिपि पद्धति की रचना की, जिसका प्रचार उत्तरी हिंदुस्तान में आज भी बहुत अधिक है। यह पद्धति भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के नाम से प्रसिद्ध है।''[3]

पंडित विष्णु नारायण भातखंडे जी ने पूरे भारत का दौरा करने के उपरांत संगीत को शास्त्रबद्ध करने के लिए कई ग्रंथ/पुस्तकें अंग्रेजी, संस्कृत, मराठी, गुजराती और हिनदि भाषाओं में लिखी, जिनका विवरण निम्नलिखित है:–

1. संगीतक सुधार के उद्देश्य के साथ आप ने सबसे पहले सन् 1909 में 'श्रीमल्ललक्ष्यसंगीतम्' नाम का ग्रंथ संस्कृत भाषा में लिखा। इस ग्रंथ को हिंदुस्तानी संगीत पद्धति का मार्ग दर्शक या आधार ग्रंथ माना है।
2. सन् 1910 में मराठी भाषा में शास्त्रीय संगीत संबंधी 'हिंदुस्तानी संगीत पद्धति' ग्रंथ चार भागों में लिखा।
3. वसंत के अनुसार, ''आप ने बड़े–बड़े गायकों का संगीत सुना और उसकी स्वरलिपि तैयार करके 'हिंदुस्तानी संगीत पद्धति – कृमिक पुस्तक मालिका' के नाम की एक ग्रंथमाला प्रकाशित करवाई जिसके छः भाग हैं। शास्त्रीय ज्ञान के लिए आपने हिंदुस्तानी संगीत पद्धति के चार भाग मराठी भाषा में लिखे।''[4] हिंदुस्तानी संगीत पद्धति– कृमिक पुस्तक मालिका में 181 रागों में ख्याल, ध्रुपद, सादरा, लक्ष्ण गीत आदि गीतों की 1892 बंदिशों का विशाल भण्डार दर्ज है।
4. सन् 1921 में आप ने 'अभिनव राग मंजरी' ग्रंथ की रचना संस्कृत भाषा में की।
5. इसी तरह गुजराती भाषा में 'स्वर मालिका' पुस्तक की रचना की।
6. इसके इलावा संस्कृत भाषा में पुस्तकों का प्रकाशन किया। जिनमें से 'ए शॉर्ट हिस्टोरीकल सर्वे ऑफ दि म्यूज़िक ऑफ अपर इण्डिया (A Short Historical Survey of the Music of Upper India)' एवं 'ए कम्पैरेटिव स्टॅडी ऑफ सम ऑफ दि लीडिंग म्यूज़िक सिस्टम्ज ऑफ दि फिफटीन्थ, सिक्सटीन्थ, सैवनटीन्थ एण्ड एटीन्थ सैन्चुरीज (A Comparative Study of Some of the Leading Music Systems of the 15th, 16th, 17th And 18th Centuries)' आदि प्रमुख थे।
7. स्वयं रचित ग्रंथों/पुस्तकों के बिना पंडित भातखंडे जी ने अनेक दुर्लभ प्रारूपों को प्रकाशित करवाकर ग्रंथों का रूप दिया जैसे कि पंडित रामामातिया रचित 'स्वर मेल कलानिधि' आदि।
8. इसके अलावा आप ने अनेक ख्यालों की रचना 'हररंग' उपनाम और 250 के करीब लक्षण गीतों की रचना 'चतुर' उपनाम से की। लक्षण गीतों में इन्होंने रागों के लक्षणों का वर्णन किया है जो कि संगीत और साहित्य के पक्ष से बहुत बड़ा प्रयास है। डॉ0 देविन्द्र कौर के अनुसार, ''राग वैभव का एक लक्षण गीत इस तरह है:''

स्थायी – भैरवी कही मन मानी
कोमल सब सुर कर गुनी गावत

प्रथम पहर की रानी
अंतरा – मध्यमवादि सुर संवादि
भक्ती रस की खानी
सब कोई गावत सब को रिझावत
भैरवी शास्त्र प्रमानी। [5]

अध्ययन का उद्देश्य

इस विषय का चयन करने के पीछे लेखक का उद्देश्य पंडित विष्णु नारायण भातखंडे द्वारा किए कार्यों को सामने लाना है।

पंडित विष्णु नारायण भातखंडे ने भातखंडे स्वरलिपि पद्धति का निर्माण किया। इस स्वरलिपि पद्धति द्वारा आज हिंदुस्तानी संगीत की बंदिशों की संभाल की गई और विद्यार्थी इसका उपयोग करने से जलदि संगीत शिक्षा प्राप्त कर लेते हैं। आपने अनेक दुर्लभ बंदिशों को एकत्रित करके उनको ग्रंथों का रूप दिया। इसलिए ऐसे महान संगीत विद्वान के बारे में लिखना आवश्यक हो जाता है।

पंडित विष्णु नारायण भातखंडे की संगीत के शास्त्र पक्ष, क्रियात्मक पक्ष एवं प्रचार–प्रसार में बहुत बड़ा योगदान है। आपने अनेक संगीतिक ग्रंथों की रचना की जिनका वर्णन हम पीछे कर आए हैं। क्रियात्मक संगीत को लिपिबद्ध करने के लिए आप ने एक नई स्वरलिपि पद्धति का निर्माण किया। यह पद्धति भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के नाम से प्रसिद्ध हैं। आप ने शुद्ध थाट 'बिलावल' मानकर 10 थाटों के अधीन रागों का वर्गीकरण किया। राग रागिनी पद्धति में कमियों को महसूस करते हुए आप ने थाट राग पद्धति का निर्माण किया। संगीत के प्रचार और प्रसार के लिए भातखंडे जी ने अखिल भारतीय संगीत सम्मेलनों की कल्पना की। डॉ0 देविन्द्र कौर के अनुसार, ''पंडित भातखंडे ने अपने यत्नों के फलस्वरूप सन् 1916 में स्टेट म्यूज़िक स्कूल, बड़ौदा का नव–निर्माण, महाराजा सयाजी राव गायकवाड़ के यत्नों के साथ सन् 1918 में माधव राव सिंधिया की मद्द के साथ और सन् 1926 में राये उमावाल बली और राय राजेश्वर बली के यत्नों के कारण 'मैरिस कॉलेज ऑफ हिंदुस्तानी म्यूज़िक' की स्थापना गवर्नर सर विलियम मैरिस के नाम के साथ की। लखनऊ का यह विद्यालय 'भातखंडे संगीत विद्यापीठ' के नाम पर जाना गया और वर्तमान में यही भातखंडे म्यूज़िक इंस्टीट्यूट (यूनिवर्सिटी) है।''[6] सन् 1916 में बड़ौदा नरेश की सहायता के साथ पहला संगीत सम्मेलन करवाया गया। इसी तरह सन् 1918 में दिल्ली, सन् 1919 में बनारस, सन् 1924 और सन् 1925 में चौथा और आखिरी पांचवां संगीत सम्मेलन लखनऊ में करवाया गया।

पंडित विष्णु नारायण भातखंडे जी के शिष्यों में वाड़ीलाल शिवराम नायक, एस.एन. रातंजनकर, राजा भईया पूछवाले, सीतराम पंत मोदि, के.जी. गिंडे और सरस्वती देवी (पहली महिला फिल्म संगीत निर्देशक) के नाम विशेष तौर पर वर्णन योग्य हैं।

शोध प्रविधि

पुस्तकों एवं ग्रंथों का पठन, शोध पत्रों का अध्ययन।

निष्कर्ष

निष्कर्ष के रूप में हम यह कह सकते हैं कि पंडित विष्णु नारायण भातखंडे ने हर तरह के साधनों की कमी के बावजूद संगीत के शास्त्र एवं क्रियात्मक पक्ष में वर्णनीय कार्य किया है। इस कार्य के लिए उन्होंने भारत के अलग–अलग क्षेत्रों की यात्रा की। क्रियात्मक संगीत को लिपिबद्ध करने लिए आपने भातखंडे स्वरलिपि पद्धति का निर्माण किया जिस के द्वारा बंदिशों को लिखना एवं गाना आसान हो गया। उन्होंने 181 रागों में ध्रुपद, ख्याल, सादरा, लक्षण गीतों की 1892 बंदिशें एकत्रित की और उनको पुस्तक का रूप दिया।

संगीत के शास्त्र पक्ष और क्रियात्मक पक्ष में युग पलटने का कार्य करने वाले और शास्त्रकार, संग्रहकर्ता, संगीत सुधारक, संगीत प्रचारक के तौर पर जाने जाते पंडित विष्णु नारायण भातखंडे 19 सितंबर, 1936 को परलोक सिधार गए। संगीत के क्षेत्र में उनकी तरफ से किए गए कार्यों को हमेशा याद रखा जाएगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *डॉ. देविन्द्र कौरः संगीत रूप भाग 1., संगीताजली पब्लिकेशन्स, 118–मालवा कालोनी, पटियाला, पन्ना 125*
2. *डॉ. लक्ष्मी नारायण गर्गः भारत के संगीतकार, संगीत कार्यालय हाथरस, उत्तर प्रदेश, पन्ना 1165*
3. *हरीशचंद्र श्रीवास्तवः हमारे प्रिय संगीतज्ञ, संगीत सदन प्रकाशन, इलाहाबाद, पन्ना 90*
4. *वसंतः संगीत विषारद्, संगीत कार्यालय हाथरस, उत्तर प्रदेश, पन्ना 520*
5. *डॉ0 देविन्द्र कौरः सामाजिक विज्ञान पत्र, अंक 59, भाग पहला, पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला, पन्ना 46*
6. *डॉ0 देविन्द्र कौरः सामाजिक विज्ञान पत्र, अंक 59, भाग पहला, पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला, पन्ना 46*